16/3/1966 बुधवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– रात के राही, थक मत जाना, सुबह की मंज़िल दूर नहीं.....

ओम्शांति। राही का अर्थ तो सुना और समझा बच्चों ने। अर्थ तो कोई नहीं समझ सकते हैं सिवाय तुम नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण लोगों (के); क्योंकि बच्चे जान चुके हैं कि इस समय के मनुष्य मात्र में पाँच विकार हैं। इसलिए बाप ने समझाया है– वो तो बंदर मिसल हैं। वा बंदर में जो बड़े बंदर होते हैं, किस्म–2 के बंदर होते हैं, अनेक प्रकार के बंदर होते हैं। एप्स भी होते हैं। उनका नाम रखा जाता है। वो मनुष्यों जैसे होते हैं। सिखलाते हैं। चाय पिलाना सिखलाते हैं। वो एक क्वालिटीज़ होती है। बंदरों की भी क्वालिटीज़ होती है। मनुष्य इस समय में गाए गए हुए हैं कि बरोबर सूरत मनुष्य की है, सीरत बंदर जैसी है और बाप समझाय रहे हैं कि ये भारतवासी इस समय में बंदर मिसल हैं। फीचर्स में अनेक प्रकार के हैं ज़रूर। ये बंदर क्यों बने हैं? बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं– तुम ऐसे जो देवी–देवताएँ थे, थे भी मनुष्य; परन्तु सीरत तुम्हारी बड़ी अच्छी थी। सर्वगुण सम्पन्न थे, सोलह कला सम्पूर्ण थे, सम्पूर्ण निर्विकारी थे, मर्यादा पुरुषोत्तम थे। तुम विश्व के मालिक थे। फिर इतने विश्व के मालिक और हीरे जैसे मंदिर, तुम ऐसे बंदर मिसल कैसे हो गए? सवाल उठेगा ना; परन्तु ये तुमको समझाया जाता है। अब मनुष्य नहीं समझते हैं; क्योंकि वो अभी बंदर के बंदर हैं। तुमने नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार कुछ फेरा पाया है। ऐसे मत समझो कि अभी हम कोई देवता बने हैं। नहीं। अभी ये चेंज हो रहे हैं, रिजूविनेट हो रहे हैं। तो ये कुछ फेरा है, कोई थोड़ा फिरा है, कोई 5 परसेन्ट फिरा है, कोई 10 परसेन्ट फिरा है। वो जो सीरत है, वो बदलती जाती है, ये समझते हो। दुनिया को तो ये मालूम नहीं है कि भारत तो हैविन था। सो भी कितना समय लगा? बोलते हैं कि क्राइस्ट के 3000 वर्ष पहले भारत तो देवी–देवता, उसको भगवती–भगवान भी कहा जाता है। ऐसे गुण थे। भगवान में गुण होते हैं ना। भगवान को कोई निर्गुण तो नहीं कहेंगे ना। निर्गुण का अर्थ है– जिसमें कोई गुण नहीं। जो बंदर होते हैं ना, उनको ये कोई अर्थ मालूम नहीं होता है कि निर्गुण का अर्थ क्या है। वो तो निर्गुण भगवान को ही कह देते हैं। मनुष्य कहते हैं मैं निर्गुण हारे में को गुण नाहीं, आपे तरस परोई। वो निर्गुण भगवान को भी कहा जाता है। एक संस्था सुनी है ना "निर्गुणी बालक"। समझा ना। निर्गुण, जिनमें कोई भी गुण नहीं। अरे देखो, कितना अच्छा नाम! मनुष्य समझते हैं ये भी बहुत अच्छा नाम है। अर्थ तो कुछ समझते नहीं हैं ना, तो जैसे बंदर मिसल हैं। मनुष्य को प्रश्न में नहीं आता है कि भला ऐसे जो भारत था, इतना ऊँच और हीरे के महल, फलाना–2 थे, बहुत साहूकार थे, अभी इनका ये डाउनफॉल कैसे हुआ? ये डाउनफॉल हुआ ना! भारत जो स्वर्ग था और देवी–देवताएँ थे, बहुत धनवान थे, वो इतना इनका डाउनफॉल कैसा हो गया, जो इस समय में वो भारतवासी बिल्कुल ही कंगाल, अब बिल्कुल ही सूरत एकदम मनुष्य की है, सीरत सभी बंदरों जैसी? गाया तो हुआ है ना– यही भारतवासी, जिनकी सूरत देवताओं की और सीरत भी देवताओं की, धर्म श्रेष्ठ, कर्म श्रेष्ठ। तो कहेंगे ना– देवी–देवताओं के धर्म भी श्रेष्ठ थे। बड़े खूबसूरत। फिर नाम ही हैं उनके गोरे। श्रीकृष्ण को सिर्फ गोरे थोड़े ही कहते थे। नहीं–2, ये इन बिचारों को मालूम नहीं है; जैसे बंदर..बेसमझ जिसको कहा जाता है। बाप आकर कहते हैं ना– सचमुच तुम बंदरों से भी भ्रष्ट–बदतर हो बने हो। ये बाप आकर समझाया ना। तो अभी कैसे बने? तुम्हारा ये इतना डाउन फॉल कैसे हुआ? ये बैठ करके भारतवासी जो बच्चे आते हैं, जिन्होंने कल्प पहले भी समझा था और समझा भी सकते हैं। तुम लोग समझा सकते हो, जो अच्छे–2 सेन्सीबुल बच्चे हैं, जिनकी कुछ सूरत जो है ; परन्तु सीरत जिनकी कुछ सुधरी हुई है। अभी सीरत सुधरती कैसी है? सूरत तो मनुष्य की है। सीरत कैसे सुधरे? तो बाप बैठकर कहते हैं कि बच्चे, तुम जब देवताएँ थे तब आत्म–अभिमानी थे और फिर जब रावण का राज्य हुआ है तो तुम देह–अभिमानी बन गए हो। ये बीमारी जो तुम लोगों को लगी है ना, सबसे जास्ती, बड़े ते बड़ी ये लग पड़ी। सतयुग में तुम आत्म–अभिमानी थे और फिर बहुत सुखी थे। तुमको आत्म–अभिमानी किसने बनाया था? ये भारतवासी नहीं जानते हैं। देखो, बाप कहते हैं कि मैंने आगे भी कहा था– मन्मना भव, मद्याजी भव अर्थात् देही–अभिमानी भव। आगे भी कहा था कि हे बच्चों! देही–अभिमानी भव। तुम्हारा

डाउनफॉल क्यों हुआ है? क्योंकि देह–अभिमानी बन गए हो। भारत जो इतना बंदर मिसल बन गए हैं और कंगाल बन गए हैं, वर्थ नॉट ए पेनी बन गए हैं, उनका मूल कारण क्या है? अभी कोई मनुष्य नहीं समझे। सभी देह–अभिमानी हैं, बिल्कुल देह–अभिमानी, श्री–2 108 जगत्गुरू कहलाने वाले देह–अभिमानी। देखो हैं ना! ये बड़े हिरण्यकश्यप, हिरणाकश(हिरण्याक्ष) जैसे देह–अभिमानी दैत्य। देखो, बाप बैठकर साफ समझाते हैं ना। तो मूल कारण क्या हो गया? जब रावण–राज्य शुरू हुआ ड्रामा अनुसार, वर्ल्ड ड्रामा प्लैन अनुसार। वो भी समझाते रहते हैं– ये ड्रामा बना हुआ है और इनको मैं ही जानता हूँ। मनुष्य तो कुछ भी जानते ही नहीं हैं बिल्कुल ही। ये भी नहीं समझते हैं कि भला हम जो भारतवासी इतने साहूकार थे, ये इतना गरीब कैसे बने। हमको तो कोई आकर ... नहीं है। हम तो हैं। बैठे हुए हैं। हमारा वही आदि सनातन देवी–देवता धर्म है; परन्तु हम ऐसे धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट कैसे बने? तो बाप बैठकर समझाते हैं– बच्चे, तुम फिर जो देही–अभिमानी थे, फिर जब रावण–राज्य शुरू हुआ है तब देह–अभिमानी बन गए। देह–अभिमानी ऐसा बने जो ये पूज्य से पुजारी भी बन गए। जब देही–अभिमानी थे तो पूज्य थे। जब देह–अभिमानी बने, तुम्हारा डाउनफॉल ऐसे होने लगा। तो देखो, सीढ़ी भी दिखलाई है ना कैसे ऊपर से डाउनफॉल हो करके नीचे पड़ता है। भारत का इतना डाउनफॉल, बिल्कुल ही वर्थ नॉट ए पेनी होने का मुख्य कारण क्या है? देह–अभिमान। मुख्य बात देह–अभिमान। बस देह–अभिमानी बनने से पीछे देखो कोई एप्स जैसे हैं। एप जैसे एक बंदर होते हैं ना, जिनको वन–मनुष्य (या) वन का मनुष्य कहते हैं, जंगल का मनुष्य। तो बरोबर ये है तो जंगल ना। काँटों का जंगल है। ....बड़ा–2 हैं ना, जिसको कहते हैं वन–बंदर यानी जंगल का रहने वाला। उन बड़े को एप कहते हैं, जिनका नाम रख दिया है– हनुमान,सुग्रीव,बाली। उसमें बैठ करके बड़े–2 बंदरों का नाम रखा है। जो बाप फिर ऐसे सुग्रीव–बाली और ये किसको कहते हैं? वो जो बड़े–2 देह–अभिमानी हैं, जो अपन को श्री–2 108 जगतगुरू कहलाते हैं। ...बस, इनसे बड़ा कोई देह–अभिमानी तो नहीं हुआ ना। कहाँ वो शिवबाबा, सर्व का सद्गति दाता, सबका बाप और वो देखो। तो अभी बाप बैठ करके अच्छी तरह से समझाते हैं ना। ये तो समझने की बातें हैं ना; क्योंकि कोई भी मनुष्य मात्र को, ये राजा–रानी, प्रेसिडेंट, ये मिनिस्टर, एजुकेशन्स मिनिस्टर्स, इनको कोई ..... आता है कि भारत ; क्योंकि वो शास्त्र सुने हैं। उसमें सतयुग की आयु लाखों वर्ष के ऊपर लगा दी है और ऐसा ही कई अभी आजकल के जो अच्छे क्रिश्चियन लोग हैं; क्योंकि वो हैं सबसे समझू , इनसे समझू हैं ना। वो तो कहते हैं कि क्राइस्ट के 3000 वर्ष पहले ये वर्ल्ड पैराडाइज़ था। अभी वर्ल्ड पैराडाइज़ था ये बिचारे वो समझ नहीं सकते हैं कि प्राचीन ही भारत था पहले–2। इसको ही स्वर्ग/वैकुंठ कहा जाता है। हैविन भी उसको कहा जाता है तो बहिश्त भी उसको कहा जाता है। तो बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं; क्योंकि आजकल वो भारत की हिस्ट्री–जॉग्राफी को तो जानते ही नहीं हैं और बच्चे भी बहुत हैं, जिनमें थोड़ा भी ज्ञान है, तो देह–अभिमान बहुत। बस, मेरे जैसा होशियार कोई नहीं है! वो अपने ही देह–अभिमान में चकित होते रहते हैं, गिरते भी रहते हैं; क्योंकि देह–अभिमान वाले देह–अभिमान में, नाम–रूप में बहुत फँस मरते हैं। जो भी देह–अभिमान वाले होंगे ना, ये बहुत जास्ती मरेंगे। देखो, ये सभी स्त्री–पुरुष देही–अभिमानी थे ना। वो देह–अभिमान में नहीं थे, भले स्त्री–पुरुष थे। ऐसे नहीं है कि उसके पिछाड़ी एकदम मोह था या ये सब कुछ था। अभी तो स्त्री के पिछाड़ी देखो जैसे बंदर एकदम। मिसाल देते हैं ना बंदरों का एकदम। ....कितने खौफनाक होते हैं। कितने स्त्री को मारते हैं बंदरों के मिसल विकार के लिए। बहुत झगड़ा करते हैं। तो अब बाप बैठकर समझाते हैं कि ये भारत की दुर्दशा कैसे हुई, ये भ्रष्टाचारी क्यों बने हैं। सभी भ्रष्टाचारी, भ्रष्टाचारी, सब भ्रष्टाचारी। कहते हैं भ्रष्टाचारी वर्ल्ड। ऐसे नहीं है कि कोई प्रेसिडेंट श्रेष्ठाचारी है या प्राइम मिनिस्टर श्रेष्ठाचारी है या इनके मिनिस्टर सब श्रेष्ठाचारी हैं। ना–ना, सभी भ्रष्टाचारी हैं; क्योंकि सभी पतित हैं ना। तो देखो, ये बापू जी था इतना, वो भी कहते थे– हे पतित–पावन, आओ! आ करके राम–राज्य स्थापन करो; परन्तु वो बिचारे को मालूम नहीं रहता था कि राम–राज्य किसको कहा जाता है। .....सभी बंदरों की कगार में, वो क्या मालूम कि राम–राज्य क्या चीज़ है।

तो वो बिचारा राम–राज्य माँग...। क्योंकि सभी आत्माएँ हैं ना। उनको तो सुख चाहिए और वो सुख मिलता है उनको बाप से। तो पतित–पावन को याद करते हैं कि हे पतित–पावन! आय करके हमें पावन ...। ये भी एक कहते हैं, अर्थ नहीं समझते हैं। देखो, सन्यासी लोग हैं, सो भी पतित–पावन सीता–राम की तालियाँ बजाते रहते हैं। गंगा में स्नान करते हैं तो ऐसे थोड़े ही समझते हैं हम पतित हिरण्यकश्यप, हिरणाकश(हिरण्याक्ष) जैसे हैं। अरे, हमारे बच्चे जो अभी एप्स से बदल करके अब ब्राह्मण बनते हैं। अरे, बात मत पूछो! ऐसे थोड़े ही है कि वो कोई देही–अभिमानी बनते हैं। मुसीबत तो ये है बच्चों के ऊपर जो देह–अभिमान में बहुत आ जाते हैं। बीमारी भी असुल वो हुई है जिसने महारोगी बनाया, बिल्कुल ही वर्थ नॉट ए पेनी बनाया। सब कुछ छीन लिया देह–अभिमान ने। पाई–पैसे जैसे वर्थ नॉट ए पेनी बने। वो सारी देह–अभिमान की ही बीमारी है। अभी ये जानते भी हो बरोबर देही–अभिमानी बनना, इसमें बड़ी मेहनत (है)। अभी समझते तो हैं। तभी बाबा बैठकर सभी बच्चों को ये भी कहते हैं– बच्चे, अपन को देखो कि देही–अभिमानी कहाँ तक बने हो, देह–अभिमानी कहाँ तक हो? जितना देही–अभिमानी बनो इतना तुम बाप को याद करो और बाप को याद करने से तो फिर तुम लोगों को रात–दिन बहुत–अथाह खुशी होनी चाहिए– अरे, हमको बाप मिला है। वो गाया जाता है– परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले परमात्मा की, जब वो मिला, अभी किस प्रकार की परवाह रही। तो खुश होना चाहिए ना कि अरे वाह! उनसे हम(को) 21 जन्म का वर्सा मिलता है और वो खुद यही कहते हैं– तुम्हारी सत्यानाश हुई है देह–अभिमान से। अभी तुमको कह देता हूँ देही–अभिमानी बनो और मामेकम् याद करो। रहो भी गृहस्थ–व्यवहार में वा भले जो भी वानप्रस्थ अवस्था या बंधनमुक्त हैं सो सर्विस में लग सकते हैं; परन्तु पहले–2 देही–अभिमानी का अर्थ समझो कि मैं आत्मा हूँ। ....इस समय में सारी जो दुनिया है वो सारी है देह–अभिमानी। देखो, देह–अभिमान है, श्री–2 108 जगत्गुरू तो देह को कहते हैं ना। हम जगत्गुरू हैं। तो देखो, धनी–धोनी कोई नहीं है ; क्योंकि सभी बंदर ही बंदर। बंदरों की दुनिया। बाप आ करके अभी समझाते हैं। अभी सबको समझाना तो बाप का फर्ज है ना। ये तो समझना चाहिए ना कि ये जो भारत इतना था, वो इतना डाउनफॉल किया हुआ, इनकी हिस्ट्री और जॉग्राफी क्या है! ये कौन समझावे हिस्ट्री–जाग्राफी.... ? इतना डाउनफॉल कैसे हुआ? तो कोई समझ सकेंगे? कोई बता सकेंगे? देखो, ये मुख्य बात है ना कि जबसे रावण का राज्य शुरू हुआ और मनुष्य देही–अभिमानी से देह–अभिमानी होने लगे। अभी ये तो कोई शास्त्रों में नहीं लिखा हुआ है कि देवताएँ कोई देही–अभिमानी थे। हाँ, ये लिखा हुआ है कि वो जानते थे, ये आत्मा है, एक शरीर बड़ा होगा, इसको छोड़ना होगा, फिर छोटा लेना होगा। तो आत्म–अभिमानी थे; परन्तु परमात्म–अभिमानी नहीं थे। क्यों...? अरे, परमात्मा ने ही उनको देही–अभिमानी बनाया था। तो वही देही–अभिमानी से देह–अभिमानी बन पड़े थे। फिर बाप बोलते हैं मैं आता ही हूँ इसलिए इनको फिर देही–अभिमानी बनाने के लिए; क्योंकि देह–अभिमान के कारण ड्रामा के प्लैन अनुसार ये ... कुछ काम के नहीं रहे। अभी भी देखो बाबा कहते हैं कि कितना समझाता रहता हूँ कि देही–अभिमानी बनो और बाप को याद करो तो बहुत मीठे बनेंगे। बस, देह–अभिमान में आने से तुम्हारा वो देह में, नाम–रूप में फँसना। किसको गाली देना, लड़ना, किसी से झगड़ना। फिर भी अपन में समझो कि वो बंदरपना ....। अरे, बाप तो यही समझते हैं ना। ये बाप .... समझाते हैं ना। बाकी ये इनके लिए भी तो ऐसे नहीं कहते हैं ना; क्योंकि ये पूरा देही–अभिमानी बन चुका। देखो, ये थोड़े ही उनके लिए कहते हैं। ये तो बाबा बैठकर समझाते हैं। ये भी समझ रहे हैं। अभी समझते हो कौन बैठ करके समझाते हैं? अरे, भूल जाते हैं, देह–अभिमान में आ करके बाप को भूल जाते हैं; क्योंकि देह–अभिमान में आ करके बस इसको ही समझते हैं। वो समझाते हैं, वो घड़ी–2 भूल जाते हैं। तो बाप आज बहुत अच्छी तरह से बैठ करके बच्चों को समझाते हैं– सिर्फ तुम नहीं हो, अरे देह–अभिमानी तो बहुत बच्चे हैं। अच्छे–2 देह–अभिमानी हैं। भले ज्ञान में होशियार हैं; पर देह–अभिमान। वो लोग देही–अभिमानी बन जाएँ। ये ज्ञान तो कोई भी, बच्चे भी समझ सकते हैं ना। ये हिस्ट्री और जॉग्राफी तुम कोई को भी समझाओ। भले पतित हैं, बंदर हैं। हिस्ट्री समझना तो बिल्कुल सहज है कि बरोबर सूर्यवंशी राज्य था,

चंद्रवंशी राज्य था। खाली उन लोगों को ड्रामा का पता नहीं है। समझाने से समझ जाएँगे; पर उसे समझाने से कोई ऊँचा पद थोड़े ही पा सकेगा, जब तलक देही–अभिमानी न बनें। इसमें बड़ी मेहनत है। जिससे भारत गिरा है, डाउनफॉल हुआ है, तो डाउनफॉल की जो मूल जड़ है, वो है देह–अभिमान। सो तो यहाँ देखते भी हो कितने देह–अभिमान हैं। इनको मालूम नहीं पड़ता है...। हमको डायरेक्शन कौन देता है वही भूल जाते हैं। ...ये सभी समझो रोज़ शिवबाबा ही और तभी बाबा कहते हैं कि देखो, कभी नहीं समझो कोई को कुछ कहते हैं, हमेशा समझो शिवबाबा, तो तुमको याद तो पड़े ना। अपन को आत्मा तो समझो ना। अगर शिवबाबा को याद नहीं करते हो, तुम तो देह–अभिमानी बनते हो और ये इनको ही समझते हो– ये सब कुछ कहते हैं, ये कहते हैं, वो कहते हैं। तो देह–अभिमानी बनने से तुम्हारी सत्यानाश हो जाती है बिल्कुल। ये देह–अभिमान ने ही तुम्हारी सारी सत्यानाश भारत...। डाउनफॉल क्यों हुआ? सब देही–अभिमानी से देह–अभिमानी बन गए– ऑल वर्ल्ड, साधु,संत,महात्मा सब। अभी ये विचार करने की, समझने की बात है ना। तब तो बाबा कहते हैं ना कि सिर्फ मामेकम् याद करो यानी देही–अभिमानी बनो। अपन को आत्मा निश्चय करो। तुम आत्मा। पहले मुख्य तो आत्मा है ना। सुनती, कहती, ये चलती, पार्ट बजाती आत्मा है। कोई देह थोड़े ही पार्ट बजाते। आत्मा देह द्वारा पार्ट बजाती है। ये बातें सब भूल गए हैं। बिल्कुल ही भूल गए हैं, एकदम ही भूल गए हैं। ये आत्म–अभिमान देवताओं में था; इसलिए वो मोहजीत गाए जाते हैं। बाप अभी देखते हैं कि दिन–प्रतिदिन ये भाषण तो बहुत अच्छे करते हैं। मनुष्य की चलन भी तो देखी जाती है ना। वो होशियार बहुत होते जाते हैं। ये ज्ञान बहुत उठाते हैं; परन्तु जो देह–अभिमान है ना, वो टूटता नहीं है; इसलिए फिर फेल हो जाते हैं। यानी वो खुशी, वो नशा, वो सब रहता ही नहीं है। पीछे कुकर्मी भी हो जाते हैं। बड़े–2 विकर्म हो जाते हैं। विकर्मों के कारण फिर ये बड़े–2 ... की सज़ा बाबा बोलते हैं ना कि देखो, हम तुमको पढ़ाते हैं तो देही–अभिमानी बनो। देह–अभिमान में आने से ही तुम्हारे से अवज्ञाएँ बहुत होती हैं। सौगुणा.. दण्ड तुम बच्चों के ऊपर चढ़ता है और तुम बहुत कड़ी सज़ाएँ खाते हो; इसलिए ट्रिब्यूनल ; नहीं तो ट्रिब्यूनल तो यहाँ होती है ना। ट्रिब्यूनल ऊपर में कैसे होगी? ...शास्त्रों में थोड़े ही लिखा हुआ है। नहीं; क्योंकि बड़े ते बड़ा तो अभी गवर्मेन्ट है ना। ...गवर्मेन्ट का राइट हैण्ड है धर्मराज। वो तुम्हारा खाता वहाँ भी भरता रहता है। वहाँ भी मेरा साथी धर्मराज है। जो तुम अच्छे कर्म करते हो तो अच्छा फल मिलता है, बुरे कर्म करते हो तो सज़ाएँ खाते हो; इसलिए ..... गर्भजेल में भी सज़ाएँ खाते हो। इसकी भी आखानी है– बरोबर एक था, गर्भ में बैठा रहता, बाहर नहीं निकलता था। बोलता– मैं .... में आराम से बैठा रहूँ और नहीं तो बच्चे अंदर बहुत सज़ा खाते हैं। कहाँ बाहर तो निकालो तो हम फिर पाप नहीं करेंगे। ये भी तो दृष्टांत है ना। ये हैं सभी इस समय की बातें। जो कुछ भी महिमा है, शास्त्रों में या कुछ में भी, है सिर्फ इस समय की महिमा, जबकि बाप आए हैं; क्योंकि महिमा अगर है तो सिर्फ एक की है। दूसरी कोई भी महिमा होती ही नहीं है। कब लिखा जाता है– त्रिमूर्ति शिवजयन्ती वर्थ डायमण्ड। बाकी जो भी जयन्तियाँ हैं ना, वर्थ नॉट ए पेनी हैं; क्योंकि किसकी महिमा करेंगे, क्या करेंगे! सिवाय अब शिवबाबा के और तो कोई पावन बना नहीं सके। तो पावन बनते हो, पतित बनते हो; पावन बनते हो, पतित बनते हो, याद उसको करते हो। अभी वो कौन है, वो कोई भी बच्चा नहीं जानते हैं। एक भी नहीं जानते हैं देखो। इतने तो देह–अभिमानी बन गए हैं यहाँ। वो जो देहीअभिमानी.....। अभी की तुम्हारी देही–अभिमानी दशा वो 21 जन्म चलती है। बाप बनाते हैं। तो उनको भी बाप बनाने वाला ठहरा ना। बलिहारी तो एक की होनी चाहिए ना। तो कहाँ वो शिवबाबा की बलिहारी श्री–2, जो श्रेष्ठ बनाने वाला, भारत को स्वर्ग बनाने वाला और जन्म भी लेते हैं यहाँ। भारत में जन्म लेते हैं शिवबाबा। तो देखो, किसको भी पता नहीं है कि शिवबाबा कब आया। तो हिस्ट्री चाहिए ना। शिवबाबा कब आया, इसकी हिस्ट्री चाहिए पहले–2 नंबर में या शिवजयन्ती। शिव तो परमपिता परमात्मा को कहा जाता है और ये मनुष्य कहे जाते हैं– शिवोऽहम्, तत् त्वम्। देखो, कितने डर्टी बन गए हैं। तभी बाबा आकर उलाहना देते हैं ना– तुम(ने) मेरी कितनी ग्लानि की है। तो कहते हैं ना– यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत

यानी जब भारत में बहुत ग्लानि होती है। ग्लानि कब पूरी होती है? जब.....मनुष्य ग्लानि करते–2...पतित बन जाते हैं। भक्तिमार्ग सो भी तो अंधश्रद्धा...। भक्तिमार्ग उसमें भी ग्लानि। सब भारत में ही ग्लानि। वो खुद आकर कहते हैं कि देखो, जब–2 भारत में...। अभी ये अक्षर तो उठाते हैं बाबा ; क्योंकि समझाते हैं कि बच्चे, मैं ये तुम्हारे सभी वेद,शास्त्र,ग्रंथ ; ये जो तुम कहते हो– यदा–2 हि धर्मस्य, सो भी समझते कुछ नहीं हो। बंदर मिसल। हो तो मनुष्य ना। बाकी तो मनुष्य मात्र कहते हैं; पर सभी झूठी बातें हैं। तुम लोगों को कुछ भी पता नहीं है, सो भी ड्रामा के प्लैन अनुसार; क्योंकि तुमको ये देह–अभिमान के कारण इतना ...डाउनफॉल होना ही होता है। तब तो मैं आऊँ ना, तुमको फिर राइज़ करूँ। राइज़ माना दिन, फॉल माना रात। ठीक है ना। गाया भी जाता है ना– ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश। अभी अज्ञान इसको थोड़े ही कहेंगे (कि) दिन अज्ञान है। दिन तो दिन है ना। वो तो सूर्य निकलता है, दिन होता है। ये जो .... अज्ञान, देखो कितना है ज्ञान। सबसे जास्ती ज्ञान ही है कि मैं आत्मा फर्स्ट, पीछे हमारी देह और मैं ... फर्स्ट देह, आत्मा का पता भी नहीं है। कुछ भी नहीं। आत्मा सो परमात्मा कह देते हैं। तो देखो, कितना पाप–आत्मा बन गए हैं; इसलिए इनका डाउनफॉल हुआ है ; क्योंकि ये ड्रामा बना हुआ है ना। ये जब यहाँ रावण का राज्य शुरू होता है तो फिर आहिस्ते–2, धीरे–2 डाउनफॉल होने लग पड़ता है, तहाँ कि आ करके ; क्योंकि 84 जन्म भी भोगना है, सीढ़ी भी उतरनी है। ये खेल बना हुआ है; पर इन खेल की हिस्ट्री–जॉगाफी कौन बतावे? तो बिचारे ये जो सभी आजकल वो कमेटियाँ बन रही हैं, ये वर्ल्ड की हिस्ट्री और जॉग्राफी। ये नहीं कहते हैं कि वर्ल्ड ये जो इंडिया/भारत थी, इसका इतना डाउनफॉल कैसे हुआ। ये कुछ नहीं समझते हैं। अभी भी भारत हमारा देश है, भारत हमारा फलाना है। अभी ऐसे नहीं कहेंगे कि भारत हमारा देश नर्कवासी है। हम नर्कवासी हैं, ऐसे नहीं कहते हैं। अभी भी भारत हमारा देश देह–अभिमानी। तो बाप आ करके समझाते हैं– अभी समय हुआ है तुम लोगों को देही–अभिमानी बनने का। जास्ती देह–अभिमान बहुतों में है। वो एकदम इसकी भी परवाह नहीं करते हैं। फिर भी उसे समझना चाहिए कि ये रथ है उनका। इनकी कोई भी ग्लानि या अवज्ञा न करें यानी जिसका रथ है वो क्या करेगा? वो तो और ही सज़ाएँ देंगे ज़रूर ; क्योंकि मुरब्बी बच्चा एक। एक की बैठ करके ये बच्चे इन द्वारा जिनको सिखलाता हूँ, ग्लानि करते हैं। उनकी बात ही नहीं मानते हैं। तभी बोला मैं बात करूँ ; पर किससे बात करूँ; क्योंकि पता नहीं पड़ता है कोई शिवबाबा हमको समझाते हैं। अच्छी–बुरी कुछ भी थोड़ी बात होती है, ये समझाते हैं तो बिगड़ पड़ते हैं, लड़ने आ जाते हैं एकदम। कोई एक नहीं है, अरे ढेर हैं। अच्छे–2 महारथी जिनको कहा जाता है, वो भी भले ज्ञान बहुत अच्छा सुनाते हैं, वाह–2, बस ताली ... परन्तु देह–अभिमान मिटा नहीं है। देह–अभिमान के कारण कोई में क्रोध देखो, कोई में लोभ देखो, कोई में मोह देखो, कोई में कुछ न कुछ, कोई में काम का नशा भी देखो; क्योंकि ये जो नाम–रूप में फँसते हैं ना, इसको सेमी काम की अवस्था कहा जाता है। नाम–रूप में नहीं फँसना है ना। ये तो देह–अभिमान पक्का हो गया है ना। ये जो इतना जल्दी उठते नहीं हैं। इनको क्या हुआ है? इतना ज्ञान सुनते हुए भी खड़े नहीं होते हैं, घड़ी–2 गिर पड़ते हैं। बाबा आकर समझाते हैं कि बस ये देह–अभिमान ही है, जिसने भारत को डाउनफॉल किया है। बड़ी देहअभिमान...ये बाबा घड़ी–2 कहते हैं– मन्मना भव, मद्याजी भव। तो मूल बात है यह। बच्चे ज्ञान में तो बहुत अच्छे हो जाते हैं। ये चित्रों को बड़ा अच्छी तरह से समझाते हैं। ये तो कोई भी समझा (सकते हैं)। एजुकेशन है ना। हम कल कॉलेज में जाकर समझाते हैं, सब सीख जाएँगे; परन्तु इनकी ये जो सीरत/चलन है, वो थोड़े ही कोई सुधरेगी। बहुत से बच्चों की, भले सीखते तो बहुत हैं; परन्तु ये जो सुधार... है– मीठा बनूँ और ये दृष्टि रखूँ कि ये तो हमारे भाई हैं। हमें ऐसे बनना है। जो मिसाल देते हैं ..जनावर, शेर, बकरी, पानी।..... कोई यहाँ शेर–बकरी होते नहीं हैं। बाबा ने बताया कि ऐसे कोई जनावर होते ही नहीं हैं। वहाँ सब फर्स्टक्लास चीज़ होती है, जो कोई भी गंद..न करे। ये मक्खियाँ होंगी क्या वहाँ ? मच्छर होंगे क्या वहाँ ? नहीं; क्योंकि गंद है ना। कोई भी गंद वाली चीज़ हो नहीं सकती है; परन्तु ये तो कोई बच्चा मुश्किल ही समझते हैं। इतना ऊँचा समझना, ये सब तो नहीं

समझ सकेंगे ना। नंबरवार समझने वाले हैं ज़रूर। मुख्य बात, जो ये कर्मभोग निकल जाए, कर्मातीत अवस्था हो जाए– ये बड़ी मुश्किल होती है। देही–अभिमानी बनना बहुत। इन लोगों को पता ही नहीं पड़ता है कि फिर भी हमको मत कौन देते हैं। अगर श्रीमत मिलनी है तो किस द्वारा? श्रीमत डायरेक्ट तो कोई नहीं देंगे। श्रीमत कौन देंगे तुमको इनके शरीर बिगर ? शिवबाबा कहते हैं मैं इनके बिगर तुमको श्रीमत कैसे दूँगा? हाँ, मैं ज्ञान के चटके देता हूँ। जा करके कोई–2 बच्चों के द्वारा समझाता हूँ; परन्तु उनको ये थोड़े ही मालूम है। आखिर रथ तो एक है ना। तो बाप आज बैठ करके अच्छी तरह से समझाते हैं। कितना समझा भी देते हैं कि ऐसे–2 बाप से बात करो, ऐसे करो, ऐसे करो। तुम देह–अभिमान में आने से फिर बहुत ही उल्टे–सुल्टे कार्य करते हो। मुफ्त अपनी बरबादी करते हो; क्योंकि अगर इम्तिहान में फेल हो जाएँगे, नतीजा क्या होगा? या तो भागन्ति भी हो सकते हो और या तो ये फेल होने से तुम बहुत अधम पद पाएँगे। ये भी अधम पद है ना– जा करके नौकर–चाकर बनना; क्योंकि पढ़ों के आगे अनपढ़े भरी ढोएँगे। ये पढ़ाई है ना। ये मन्मना भव क्या है? यह भी तो पढ़ाई है। समझा जाता है ना। इसलिए बच्चे देह–अभिमान छोड़ो। देह–अभिमान के कारण तुम लोग बहुत नुकसान करते रहते हो। इतना अच्छी तरह से कोई को समझा नहीं सकते हो। अभी तो बिचारे बहुत निकले हैं जो समझते हैं कि ये भारत की हिस्ट्री–जॉग्राफी होनी चाहिए। है नहीं। उसमें भी कौन–सी हिस्ट्री–जॉग्राफी? भारत .... ऊँचा था उसका डाउनफॉल कैसे हुआ? अभी ये समझानी कोई दूसरा दे सकेंगे? सिवाय तुम्हारे में भी जो अच्छा बच्चा होगा, उनसे अच्छी तरह से समझानी निकलेगी। भले बाबा कहते हैं ना– नॉलेज तो अच्छी है। भले किसको ये समझा भी देवे; परन्तु अगर देह–अभिमान अंदर है तो वो पद फिर भी ऊँचा नहीं पाएगा, फिर भी देही–अभिमानी जास्ती पद पा जाएँगे। देखो, इसलिए कर्मातीत अवस्था (में) तो कोई पहुँचा ही नहीं है। देखो, जब ये बाप अपने लिए भी ये कहते हैं। अब बाप भी कहते हैं तो ये भी नहीं पहुँचा है; क्योंकि इनको तो और ही मत्थे पर मामला, झंझट बहुत है। देह–अभिमान में आना पड़ता है। देही–अभिमान में रहते हुए भी इनके ऊपर बहुत ही ये सेन्टर्स हैं, ये पढ़ा, चिट्ठी पढ़ा, ये सारा दिन ... इनके ऊपर तो बहुत फिकरात है। भले वो समझते हैं भई ड्रामा अनुसार, फिर भी देखो समझाने के लिए युक्तियाँ तो रचनी होती हैं ना। तभी बाबा कहते हैं ना कि बच्चे, बाबा से भी तुम देही–अभिमानी जास्ती रह सकते हो। वास्तव में ये जो सभी हैं, अभी किचन में है...। अच्छा, बाबा बैठे हैं, तो सबसे अच्छे जा सकते हो अगर शिवबाबा की याद में रह करके तुम भण्डारा भी चढ़ाते रहो, खाना भी पकाते रहो। तुम्हारे ऊपर बाप जैसा कोई बोझा तो नहीं है ना इतना सम्भालने–करने का। ये सारा बोझा है बाप के ऊपर ; क्योंकि नाम तो इनका बदनाम होता है ना फिर भी ; क्योंकि इनकी संस्था का हेड इनको समझते हैं। "प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ"। अभी उनको ये तो मालूम नहीं है कि इनमें कोई शिवबाबा बैठे हैं। कोई दूसरे को मालूम नहीं है। तुम्हारे में से भी कोई मुश्किल ही ये निश्चय में रहते हैं। अगर बाबा थोड़ी आँख दिखलावे ना, ये यहाँ से कपड़े लेकर अपने पुराने घर चले जावें; इसलिए बाबा बहुत ठण्डा रहता है। जितना हो सकता है उतना ठण्डा रहता है। नहीं तो बाबा बोलते हैं कि इससे बहुत जास्ती ...चले जावें एकदम; परन्तु जानते हैं कि जाने से इनकी सत्यानाश हो जाएगी बिल्कुल ही। जा करके कोई चाण्डाल का जन्म ले लेंगे। अभी बाप/शिवबाबा जानते हैं कि ये हो जाएगा। ऐसे थोड़े ही है कि अलग करेंगे, फिर भी वो प्यार से चल करके उनको बचाएँगे...। नहीं तो बाबा कोई को थोड़ा गुस्सा करे ना, अरे बहुत क्रोध ..... बहुत–2 ट्रेटर्स बन जावें, एकदम ट्रेटर्स बन जावें। बहुत अच्छे–2 फर्स्टक्लास–2 जिसको कहा जाता है ना, वो ट्रेटर्स बन जावें।.... देखते हैं, सुनते हैं, बहुत क्रोधी होते हैं। देह–अभिमान है। ठिक्कर–2 पर, भित्तर–2 पर बहुत रड़ाते हैं। जहाँ भी जाओ, बड़े–2 अच्छे–2। बाबा वाणी चलाते हैं ना, वो समझ जाते होंगे कि बाबा हम लोग के लिए कहते हैं। इसमें सब आ जाएँगे। एक नहीं, सब आ जाएँगे; क्योंकि जो देही–अभिमान की बात बाबा समझाते हैं ना.....ये तो बड़ी समझानी कि वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्रफी। ये भारत की भी हिस्ट्री–जॉग्रफी तो कोई जानते नहीं हैं ना। भारत जो इतना था उनका डाउनफॉल कैसे हुआ? अभी ये तो कब था? ये श्री लक्ष्मी–नारायण का

राज्य था। स्वर्ग था। कब था– ये कोई को भी पता नहीं है। शास्त्रों में, उनमें गपोड़े लगाय दिए, लाखों वर्ष हो गए और एक तरफ में आजकल कहते हैं कि महाभारत की लड़ाई आ गई है और एक तरफ में कहते भी हैं 3000 बिफोर क्राइस्ट ये पैराडाइज़ था। क्या पैराडाइज़ था, कौन पैराडाइज़ था? दुनिया पैराडाइज़ थी। दुनिया में पैराडाइज़ में कौन था? 5000 वर्ष पहले मालिक कौन था? ये तो भारतवासी समझ न सके; क्योंकि वो कहते हैं सतयुग, जिसको पैराडाइज़ कहते हैं, उनको तो लाखों वर्ष हो गए। तो बिचारा कैसे कोई समझ सके जब तलक तुम लोग उनको न समझाओ। इसलिए आजकल लिखा–पढ़ी चल रही है कि जो कुछ अच्छे बच्चे हों ...नॉलेज कुछ अच्छी हो जिसे समझाते हैं, तो फिर तुम आपस में 5/7 अच्छे की मीटिंग बना करके, जो मुकर्रर किए हुए हैं, ये 15/20 ऑफिसर हैं। इनमें 3 विलायत के भी हैं। अभी तो अख़बारों में पढ़ते हैं। ...बॉम्बे से खबर आई है। पता नहीं, दिल्ली में देह–अभिमानी और ही जास्ती हैं। वो लोग कुछ पढ़ते नहीं हैं। ..गपोड़ा मारते हैं...या कुछ समझते नहीं हैं। ये बड़ों–बड़ों की एक कमेटी बनी हुई है और उनमें 3 फॉरेनर्स भी हैं कि हमको वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्रफी कैसे मिले? बाबा ने एक दफा लिखा भी था। इसमें जो लिखा वही फिलॉसाफी अक्षर है। ... चलकर स्प्रिच्युअल नॉलेज लिखना यानी अभी लिखा तो सही; परन्तु मैं नहीं समझता हूँ कि कोई इनकी बुद्धि में ये है। फिर भी ये ...बनाते होंगे तो... अक्षर यही डालते होंगे; क्योंकि वो कोई नोट तो करते नहीं हैं जो बुद्धि में प्वाइंट रहे या ...देही–अभिमानी हों तो बुद्धि में रहे। देही–अभिमानी होने से कुछ जास्ती बुद्धि में रहता है। फिलॉसाफी एण्ड वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्रफी फिलॉसाफी भगवान है। द गॉड फादर शिवा– वो फिलासाफी नहीं है। नहीं, स्प्रिच्युअल नॉलेज है। अभी ये भी कट जाना चाहिए। ये तो हम कर सकते हैं ना। ...अक्षर तो वो निकाल देते, दूसरा अक्षर लिखा देना। ...अरे, इतनी बुद्धि है कहाँ! ये तो सब कुछ बाबा को डायरेक्शन देना पड़े। कोई आर्टिस्ट मंगाना पड़े। ये आ करके जो–2 जिस–2 सेन्टर में ये फिलासफी अक्षर (हैं) वो निकल जाना चाहिए। अभी देखो बाबा सबको डायरेक्शन देते हैं ना। डायरेक्शन देते हैं जो ऊपर में फिलासाफी अक्षर निकला हुआ है, वो स्प्रिच्युअल नॉलेज लिख देवे या रूहानी ज्ञान, रूहानी बाप द्वारा। ये करेक्शन कर देनी चाहिए.....बच्चों को करेक्शन तो मिलती रहती है ना। तो करेक्शन करना है। अपन को भी करेक्शन करते जाते हो ना। बहुत इन्करेक्ट हुए पड़े हो ना। अभी देखो करेक्शन देते हैं; परन्तु बस सुना–अनसुना, देह–अभिमान में बहुत रहने के कारण कोई भी...प्रबंध करते नहीं हैं। नहीं तो क्या करना चाहिए, एक आर्टिस्ट होना चाहिए, जो सबको ही अपने पास मँगा करके ये चेंज कर देवे। जो–2 भी नई–2 बातें निकलती हैं उसको चेंज करते रहें। अभी तो नई बातें निकलती हैं कि डाउनफॉल। चलो भाषण करना चाहिए। एक/दो भाषण अच्छे–2 कोई करे– ये भारत जो इतना ऊँचा था, पैराडाइज़ था, फलाना था और आज से 5000 वर्ष की बात है, सतयुग था। उनका डाउनफॉल हो करके अभी कलहयुग और ये एकदम वर्थ नॉट ए पैनी कैसे हुआ? चलो, वहाँ आकर समझाएँगे। कितना बड़ा है! अच्छा, बाबा बोलते हैं, अगर ऐसे पर्त्रे छपा करके और एरोप्लैन के द्वारा गिराया जाए। इसमें बड़े–2 हॉल चाहिए। मनुष्य ऐसे आएँगे जैसे मच्छरों के मिसल। भारत जो इतना था उस(का) डाउनफॉल इस समय ऐसा क्यों हुआ? उनको कितना वर्ष लगा? हम आपको ये समझाते हैं। अभी समझाने वाला बड़ा होशियार चाहिए। तो देखो, तुम्हारा नाम कितना बाला हो जावे। सो भी पहले–2 गवर्मेन्ट चाहती है। गवर्मेन्ट के ही उनको बुलाना चाहिए और दिल्ली में ही तो गवर्मेन्ट है। वो जो बड़ा हॉल वहाँ लिया था ना, जहाँ प्रदर्शनी किया था। देखो, बाबा डायरेक्शन्स भी देते रहते हैं। हॉल होवे बड़ा। उनमें डाल करके, सभी अख़बारों में वो भी डालें कि हम तुमको...। वो जो कमेटी बननी है उसके भी आ जाएँगे... क्योंकि कार्ड तो निकालेंगे और उनको भी भेज देंगे। सबको बैठकरके डायरेक्शन्स दे रहे हैं– दिल्ली,बॉम्बे,कलकत्ता सबको। फिर उनमें ये तुम बताओ, जो होशियार हो कि ये भारत जो आज से बिफोर क्राइस्ट, ऐसे ही अक्षर भी वही लिखे, पैराडाइज़ था, हैविन था, बहिश्त था, एकदम हीरे–जवाहरों के महल थे। अभी इस समय में आयरन एज में इनका इतना डाउनफॉल कैसे हुआ? आ करके समझो। हम सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्रफी आप लोगों को

समझाएँगे। तो देखो, तुम समझते हो कितना आएगा! तुम्हारा इतना में नाम इतना बाला हो जावे, बात मत पूछो। बस जहाँ–तहाँ यही धुन अच्छी–2, बड़े–2 हॉल लेना। चलो 500,1000,2000 लेगा ना। अरे, वो तो आपे ही आ जाएँगे ना। वो जाएँगे कहाँ गवर्मेन्ट में! जब ये समझेंगे, ये ऐसी होशियार हैं, ये यही हैं, इनको ये समझाने वाले वो हैं, पैसे की तो बात ही नहीं है। पैसे तो लेंगे ही नहीं। अभी इस समय में कोई आकर कहे– बाबा, अच्छा–2, ये जो मकान है, हॉल है, मैं आपको प्रेजेन्ट दूँ। बोला– नहीं, तुम्हारी प्रेजेन्ट नहीं चाहिए। ये जो तुम देते हो, काम के लिए ले लेंगे, हम लेंगे नहीं ; क्योंकि हमको फिर वहाँ देना पड़ता है। जो–2 भी कुछ सरेण्डर करता है यानी जो दान करते हैं उसको देना पड़ता है। अज्ञान काल में भी बाप कहेंगे– तुम दान करते थे तो मुझे...तो देना पड़ता था और अभी तो मैं डायेक्ट हूँ और मैं तुम्हारे से दान लेकर क्या करूँगा? मैं तुम्हारे से ये मकान लेकर...। ये तो टूट–फूट जाएँगे। हम तुमको ... भरकर देंगे, ऐसे तो मैं कच्चा व्यापारी नहीं हूँ। हम भी पक्का सर्राफ हूँ। टू लेट, ऐसे कह देंगे। भाषण तो करके देखो, क्या होता है! क्योंकि दिन–प्रतिदिन दुनिया की अवस्था बाहर में बड़ी बिगड़ी हुई होती है। दिन–प्रतिदिन बिगड़ते रहते हैं। ये बंदर लोग कुछ भी नहीं समझते हैं। ये तो भारत हमारा देश है, भारत हमारा सोने की झिरकी है। झिरकी नहीं है, मिट्टी की भी झिरकी नहीं है। तो इनकी आँखें खुलें; परन्तु समझदार चाहिए। देह–अभिमानी नहीं काम कर सके। ..ना–2। वो तो अपना पद ही सारा भ्रष्ट करते जाते हैं और अपना नुकसान करते जाते हैं। फिर जो करते हैं सो पाएँगे। जो अच्छा करेंगे सो अच्छा और जो बुरा करेंगे सो बुरा पाएँगे। वो तो अपने ऊपर है, बच्चों के ऊपर। 2/5, 10/20 बच्चे खराब निकलेंगे। वो तो है ही ना– आश्चर्यवत् सुनन्ति, कथन्ति, भागन्ति। असुर अमृत पीकर और फिर ट्रेटर बनन्ति। वो तो लिखा हुआ है कल्प पहले भी, तो अभी भी होंगे। उनकी कोई चिन्ता शिवबाबा को रहती है क्या? नहीं, फिर भी अबलाओं को तकलीफ न हो इनके ट्रेटर बनने से, कोई से भी; अरे इसलिए उनकी सम्भाल की जाती है। तो वो बिचारे दुखी न हो, ये बहुत पाप–आत्मा न बन जावे ऐसे, दूसरों को दुःखी करके। ऐसे तो बहुत हैं ऐसे–2, कोई ऐसे थोड़े ही हैं। बड़े देह–अभिमानी बच्चे–बच्चियाँ हैं, जो बहुत नुकसान करते रहते हैं। झगड़े झट रहते हैं वो सेन्टर में– ये हमारा सेन्टर, ये तुम्हारा सेन्टर, ये नहीं चाहिए, वो नहीं चाहिए, हम ऐसे, हम फलाना करेंगे, हम ये करेंगे। अरे, इतना देह–अभिमान है सेन्टर में रहने वाले वा सेन्टर्स लेने वाले... बात मत पूछो। इसलिए बाबा कहते हैं ना– गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने। वैसे शिवबाबा जाने, दूसरा ये ब्रह्मा बाबा जाने, और कौन जान सकता है! इसलिए बच्चों को समझाते जाते हैं– एक तो देह–अभिमान छोड़ते जाओ। ये आधाकल्प की बड़ी बीमारी है और तुमको इस अंतिम जन्म में ये बीमारी निकालनी है, नहीं निकालेंगे तो ऐसे ही बंदर का बंदर, ऐसे क्या जाकर पद पाएँगे, धूल भी नहीं पाएँगे! इसलिए ये ऐसे मत समझो कि बस ये है। नहीं–2, शिवबाबा का ये रथ है। शिवबाबा को... एक अकेला बच्चा, उनका कितना उनको रिगार्ड होगा। ऐसे थोड़े ही मासी का घर (है)। कितनी गाली खाते हैं ; परंतु बहुत समझाया। बाबा ने डायेक्शन्स दिया है। बच्चे चिट्ठी लिखते हैं– बाबा, ऐसे–2 कमेटियाँ निकली हैं। बाबा उसका डायरेक्शन्स मुरली में दे देते हैं कि ऐसे–2 करो। देह–अभिमान छोड़ो। ये नाम–रूप में जो फँस मरते हैं, वो भी छोड़े। एकदम देह सहित यानी अपन को नंगा समझना है। तो नंगे से प्यार करना पड़े बाप को। अगर देहधारी देहों को ही प्यार करते रहेंगे, याद करते रहेंगे तो मुर्दे बन जाएँगे। कब्रदाखिल तो पहले ही बने हैं देह–अभिमानी हो करके, फिर और ही कब्रदाखिल होंगे। मुरली चलाई है, हम देखें इनका रिस्पॉण्ड कैसे आता है, कौन–2 निकलते हैं जो अच्छी तरह से भारत का डाउनफॉल और राइज़ ...(का) समाचार लिखते हैं, कैसे कहाँ बड़े–2 हॉलों में, बड़े–2 क्लब्स में, बड़े–2 आदमियों को निमंत्रण देते हैं। मालूम पड़ जाएगा झट। बाबा ऐसे नहीं कहते छोटे–मोटे जा करके छोटे–2 को। नहीं, मैं बड़ों को ललकार कर रहा हूँ– जनरल्स को, महारथियों को कि दिल्ली में वही इनका .... उनमें बड़े–2 आदमियों को बिल्कुल बुलाओ। उसमें आ करके हम तुमको समझावें कि भारत जो हैविन था सो हेल कैसे बना है? जो यहाँ इतना हीरे जैसा था, हीरे (के) महल बनाते हैं, ये कौड़ी मिसल कैसे बना है? हम आपको सारे वर्ल्ड

की हिस्ट्री–जॉग्रफी श्रीमत पर समझाएँगे। श्रीमत माना ही परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर समझाएँगे। इनकॉरपोरियल श्रीमत। वहाँ झट गीता का भी सिद्ध कर देंगे। तो अभी जब तैयारी ये जो कर रहे हैं वो ऐसे–2 तो नहीं.....ये तो शेर जो होंगे वो आपे ही मुझे नाम निकालकर देंगे। आपे ही बाबा को लिखेंगे कि बाबा, हम ये प्रबंध रच रहे हैं। तो देखें, क्या करते हैं? नौकरी तो ठीक है गवर्मेन्ट की; परन्तु बहुत हैं जिनको कोई पैसे की दरकार नहीं है। इतने पैसे पड़े हुए हैं जो बाकी है क्या! दो–चार वर्ष की बात है...फिर ... शिवबाबा बैठे हैं ना। कहाँ भी छोड़ सकते हैं महीना–2 ..... 500 रुपया कमती–जास्ती होगा। तो जा करके सर्विस करके दिखलावे और पहले–2 दिल्ली में; क्योंकि दिल्ली से ही निकली हैं ये बातें कि वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्रफी का कोई समाचार सुनावे। नहीं, ये कहें कि वर्ल्ड, ये भारत का डाउन फाल कैसे हुआ? जो भारत आज से थ्री थाउजेंड(2500) बिफोर हैविन था और देवी–देवताओं का राज्य था, अब ये असुरों का राज्य कैसे हुआ? ये पतित अपन को बोला। ये पतित कैसे हुआ? ये जो पतित हुआ ये देह–अभिमान के कारण। अच्छा, टोली दो। बहुत जन्म के अंत के जन्म का भी अंत का जन्म बिल्कुल। तुम जास्ती पुरुषार्थ कर सकते हो। इनके मत्थे मामले बहुत हैं। इससे भी देखो जो गरीब हैं, धंधे में बैठे हैं, उनको क्या है! उनको तो और ही देही–अभिमानी बहुत ऐसे होना चाहिए। बाबा कहते हैं योग में रहकर अगर उनको खाना–पीना खिलावे तो बहुत हो जावे। अगर योग में रहकर नहीं खिलाते हैं... तो देह–अभिमान में आ जाते हैं, उनको और ही जास्ती पड़ जाता है...। सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।

16/3/1966 रात्रि क्लास

बाबा ने समझाया ना, समझ तो सकते हैं, मुरली भी समझेंगे ये भारत क्या था, क्या बना है! ये जब कहाँ अच्छा भाषण करें तो ये सर्वव्यापी का ज्ञान और कृष्ण की बात.. अभी तलक भी इतना जोर से कहाँ नहीं चली है। कहाँ कालेजों में आवाज़ होवे, बड़ी–2 यूनिवर्सिटियों में आवाज़ होवे यानी कि कोई अच्छी लिखा–पढ़ी होवे। है कुछ बॉम्बे और दिल्ली। और तो बाकी सब डल हैं इन बातों में। डल हेडेड इन बातों में जो गवर्मेण्ट के इन डिपार्टमेंट को पकड़े। एजुकेशन डिपार्टमेंट वाले समझ जाएं ; परन्तु फिर पवित्रता में रहे, योग में रहे। योग की मंजिल बड़ी डिफीकल्ट है। योग में बहुत कम रहते हैं। ...बाप की याद बहुत अच्छी खुशी में लाती है। है भी सहज–ते–सहज बात और डिफीकल्ट–ते–डिफीकल्ट भी यही है। सारा मदार है बच्चों के योग पर। कर्मातीत अवस्था हो जाए और लड़ाई शुरू ... एक बात बिल्कुल ही सहज मिली हुई है। बहुत बड़ी कमाई के लिए है। कोई भी शारीरिक तकलीफ नहीं। (म्युज़िक बजा)